B.A. III Part Hindi Hons, Pa

क्रमशः:

डॉ० अनुपमा कुमारी — रसखान

S.S. College Jehanabad ② 9/2/22

की कामना लेकर ही तो वे भक्ति के प्रांगण में उतरे थे। रसखान भाव दशाओं के कारण ही वे ढिठाई से कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हैं। उनका प्रसिद्ध पद है —

जोगी जती तपसी अरु सिद्ध
निरंतर जाहि समाधि लगावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया
छछियों भरि छाछ पै नाच नचावैं॥

रसखान का प्रेम स्वाभाविक है। वे कृष्ण की छवि पर अनुरक्त हैं। इन्होंने कृष्ण का रूप वर्णन बड़े ही मनमोहक ढंग से किया है। रसखान के शब्दचित्र बड़े सजीव स्वाभाविक और हृदयग्राह्य हैं —

कानन कुंडल मोर पखा सिर
कण्ठ में गुंजमाल बिराजती है।
मुरली कर में अधर मुसकानि
तरंग महा छवि छाजती है।

इस पद में कृष्ण का शब्दचित्र उपस्थित किया गया है। प्रत्येक चित्र सजीव और मनोहारी है। रसखान के प्रेमचित्रण में संयोग श्रृंगार की प्रधानता है। वियोग की उनके पास न तो तीव्र अनुभूति है और न तो उसका सामना करने का उनके पास धैर्य ही है। इस दृष्टि से रसखान और घनानन्द दोनों एक दूसरे के पूरक जान पड़ते हैं। रसखान में जो वियोग की भावना है वह उनके सवैये में इस प्रकार है —

रसखान सुन्यौ है वियोग के ताप
मलिन महा दुति देह तिया की।
पंकज सो मुख भौ मुरझाई
लगी लपटै बिरहागिन हिया की।

रसखान की भाषा उनके भावों के समान ही स्वच्छ, निराडम्बर एवं प्रवाहपूर्ण है। शुक्ल जी ने इनकी भाषा के सम्बन्ध में कहा है — "शुद्ध ब्रजभाषा का जो चलतापन और सफाई इनकी और घनानंद की रचनाओं में है वह अन्यत्र दुर्लभ है" इनकी भाषा सरल सुबोध ब्रजभाषा है जिसमें माधुर्य गुण की प्रधानता है।